एक घरेलू दवाई पर विज्ञान की मुहर

वैसे तो लोरेंज़ों तेल को सही मायने में घरेलू दवा नहीं कह सकते क्योंकि इसकी खोज एक बीमार बच्चे के माता-पिता ने जैव रसायन विज्ञान की काफी खाक छानने के बाद ही की थी। अलबत्ता, पूरा किस्सा किसी साहसिक कहानी से कम नहीं है। इस मामले को लेकर लोरेंज़ोस ऑइल नामक एक फिल्म भी बनी है।

17 वर्ष पहले लोरेंज़ो ओडोन नाम के एक बच्चे को चलने-फिरने में दिक्कत होने लगी। वह चलते-चलते कुर्सी-टेबल से टकरा जाता था। पता चला कि उसे एक जिनेटिक बीमारी है - *एड्रीनोल्यूको डिस्ट्रॉफी*। इस बीमारी का मरीज़ धीरे-धीरे चलते-फिरने, सुनने, बोलने की क्षमता खो बैठता है।

जब लोरेंज़ों को यह बीमारी हो गई, तो उसके माता-पिता को बताया गया कि वह अधिक से अधिक दो साल और जिएगा। मगर ओडोन दम्पत्ति ने हार नहीं मानी। वे वैज्ञानिकों के दरवाज़े खटखटाते रहे और साथ ही तंत्रिका विज्ञान और जैव रसायन शास्त्र की किताबों में खोज करते रहे। अन्ततः वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि उनके बेटे के लिए सबसे अच्छी दवाई ओलीक अम्ल व एरुसिक अम्ल का मिश्रण है। दोनों ही कार्बनिक अम्ल हैं। वे अपने बच्चे को नियमित रूप से यह दवा देते रहे।

लोरेंज़ों आज जीवित है मगर चल-फिर नहीं सकता। परिवार उसकी देखभाल करता है। चिकित्सा जगत इस बात के प्रति आश्वस्त नहीं था कि यह उस तेल का कमाल है। सबको लगता था कि लोरेंज़ों संयोगवश ही बचा है।

दरअसल *एड्रीनोल्यूको डिस्ट्रॉफी* नामक यह रोग तंत्रिका का एक रोग है। इसमें तंत्रिकाओं के इर्द-गिर्द मौजूद मायलीन का आवरण ठीक से नहीं बन पाता। यह मायलीन आवरण तंत्रिकाओं को आसपास के परिवेश से अलग रखता है ताकि उनमें विद्युतीय संदेशों का आवागमन असानी से हो सके। इस रोग से पीड़ित बच्चों के खून में संतृप्त वसा अम्लों की मात्रा बहुत अधिक होती है। ओलीक अम्ल और एरुसिक अम्ल का मिश्रण इस मात्रा को वापिस सामान्य स्तर पर ले आता है।

लोरेंज़ों के इलाज के बाद कुछ चिकित्सकों ने ज़रूर पूरे मामले को गंभीरता से लिया। 1989 और 1999 के बीच वैज्ञानिकों के दो दलों ने इस तेल की जांच की। उन्होंने इस रोग से ग्रस्त 104 बच्चों पर कुछ प्रयोग किए। उस समय इन सारे बच्चों की उम्र करीब 6 वर्ष थी और अभी उनमें रोग के लक्षण प्रकट होना शुरु नहीं हुए थे। इनमें से कुछ बच्चों के पालकों ने उन्हें उक्त तेल देना जारी रखा था। देखा गया कि इन बच्चों में रोग के लक्षण कम उभरे। प्रयोग के अंत में तेल की खुराक पाने वाले बच्चों में से 76 फीसदी तन्दुरुस्त थे और उनका मस्तिष्क भी सामान्य था। जिन बच्चों को तेल नहीं दिया गया था उनमें से मात्र 30 फीसदी ही स्वस्थ रहे।

ज़ाहिर है कि इस तेल से कुछ सुरक्षा तो मिलती है। वैसे उक्त प्रयोग में तुलना के लिए ऐसा कोई बच्चा न था जिसे प्लैसिबो दिया गया हो - यानी स्वास्थ्यवर्धक तेल के नाम पर कोई अन्य चीज़ दी गई हो। एक और बात यह है कि लक्षण उभरने के बाद यह तेल कोई खास मदद नहीं करता। और हो सकता है कि आगे चलकर इन बच्चों में रोग के लक्षण उभर आएं।

मगर लोरेंज़ों के माता-पिता काफी संतुष्ट हैं और महसूस करते हैं कि उनके कारण एक नई चीज़ खोजी गई है। उपरोक्त अध्ययन के निदेशक ह्यूगो मोसर का कहना है कि अब डॉक्टरों को इस औषधि को गंभीरता से लेना चाहिए।

(स्रोत फीचर्स)